राजस्थान साहित्य अकादमी
(राजस्थान सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

सेक्टर 4, हिरणमगरी,
उदयपुर (राज.) – 313 002
दूरभाष : (0294) 2461717

आज़ादी का अमृत महोत्सव

क्रमांक : रासाअ/समरोह/2022–23

दिनांक : 13 अप्रैल, 2022

राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव शृंखला के अन्तर्गत साहित्यिक गोष्ठी का समारोहपूर्वक आयोजन

उदयपुर/13 अप्रैल, 2022 राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव शृखंला के अन्तर्गत साहित्यिक गोष्ठी आयोजन किया गया। जिसका केन्द्रीय विषय **"राजस्थान में साहित्य द्वारा सामाजिक उत्थान एवं जागृति** था। अकादमी सचिव डॉ. बंसत सिंह सोलंकी ने अतिथियों का स्वागत किया। साहित्यिक गोष्ठी के अध्यक्ष प्रो. कृष्णकुमार शर्मा ने कहा कि साहित्य व्यवहार ज्ञान देता है और व्यवहार ज्ञान से व्यक्ति का उत्थान होता है तो अप्रत्यक्ष रूप से समाज का भी उत्थान होता है। आजादी के दिनों में जागरण गीतों के माध्यम से जनजागरण किया गया था। कविता प्रतिबिम्ब या दपर्ण नहीं हैं बल्कि इससे बढ़कर इसकी भूमिका है। मुख्य अतिथि डॉ. कुन्दन माली ने कहा कि साहित्य सामाजिक कुरीतियों का शमन करके नये समाज की रचना में सहायक होता रहा है। साहित्य के मूल्य मानवीय, सामाजिक और सांस्कृतिक हैं। परम्परा, समाज और संस्कृति की दृष्टि से साहित्य प्रतिगामी शक्तियों का विरोध करता है। सामाजिक उत्थान और जागृति में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। मुख्यवक्ता डॉ. गिरीशनाथ माथुर ने अम्बेडकर के जीवन संघर्ष का उल्लेख करते हुए कहा कि मानवता की रक्षा के लिए साहित्य से जुड़ना आवश्यक है। सामाजिक असमानता ही हमारे विकास के बाधक है। बिजौलिया किसान आंदोलन कि चर्चा करतें हुए विजय सिंह पथिक द्वारा साहित्य के माध्यम से जनजागृति लाई गई थी। उन्होंने माणिक्यलाल वर्मा के **पंछीड़ा** गीत का उल्लेख करते हुए कहा कि साहित्य अन्याय के प्रति प्रतिकार की भावना को जगाता है। गोष्ठी में पत्रवाचन करते हुए डॉ. हुसैनी बोहरा ने कहा कि राजस्थान के कवियों द्वारा रचित कविताओं के माध्यम से सामाजिक विषमताओं का उल्लेख करते हुए जन सामान्य में उत्पन्न चेतना से समाज में बदलाव और जागृति आई है। हर युग के कवियों ने अपने समय के समाज को रेखांकित करते हुए उसमें परिवर्तन का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि साहित्य समाज को स्पंदित और गतिशील करने का सशक्त माध्यम है। भक्तिकाल के कवियों ने अपनी वाणियों के माध्यम से सामाजिक समरसता का संदेश दिया गया था। रैदास, दादू, सुन्दरदास आदि कवियों ने सामाजिक वर्गभेद को दूर करने की बात को सशक्ता से अभिव्यक्त किया है। आजादी के दिनों में जयनारायण व्यास, गंगाराम पथिक आदि ने जनसामान्य के पक्ष में अपनी कविताओं की रचना की है। तारा प्रकाश जोशी, नंद चतुर्वेदी कमर मेवाड़ी भगवती लाल व्यास, इत्यादि कवियों ने समाज की विषमता का चित्रण करते हुए उसके प्रति जागरण की बात कही है। डॉ. प्रकाश आतुर ने सामाजिक चेतना के स्वर को मुखरित करते हुए लिखा था कि **'ऐसा सपन सजाओं जिसमें समता का अधिकारा हो। ऐसी जलन जलाओं जिससे जल जाए यह अर्थ विषमता।"**

इस गोष्ठी में नगर के प्रमुख साहित्यकार डॉ. ज्याति पुंज, श्रीनिवासअय्यर,डॉ. प्रीता भार्गव, डॉ. चन्द्रकान्ता बंसल, डॉ. सुरेश सालवी, डॉ. सिम्मी सिंह, श्री गौरीकांत शर्मा, रेण ुदेवपुरा, शकुंतला सरूपरिया, मधु अग्रवाल, शिवदान सिंह जोलावास, मनमोहन मधुकर, जगदीश तिवारी, बीना गौड, डॉ. कुजन आचार्य, एवं अशोक जैन मंथन आदि ने भीदारी की।

कार्यक्रम के अंत में अकादमी सचिव डॉ. बंसत सिंह सोलंकी ने अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अकादमी कि विभिन्न प्रवृतिया ं,गतिविधियों एवं समारोह में सक्रिय भागीदारी अपेक्षित है।
उक्त कार्यक्रम का संचालन श्रीमती किरण बाला जीनगर ने किया ।

निःशुल्क प्रेस नोट प्रकाशनार्थ सादर प्रेषित है ।

श्री सम्पादक महोदय,

भवदीय,

(डॉ.बसंत सिंह सोलंकी)
सचिव.

press not new